

दर्शन-पाठ

(श्री युगलजी कृत)

दर्शन श्री देवाधिदेव का, दर्शन पाप विनाशन है ।
दर्शन है सोपान स्वर्ग का, और मोक्ष का साधन है ॥१॥
श्री जिनेन्द्र के दर्शन औ, निर्ग्रन्थ साधु के वंदन से ।
अधिक देर अघ नहीं रहै, जल छिद्रसहित कर में जैसे ॥२॥
वीतराग-मुख के दर्शन की, पद्मराग-सम शांतप्रभा ।
जन्म-जन्म के पातक क्षण में, दर्शन से हों शांत विदा ॥३॥
दर्शन श्री जिनदेव सूर्य, संसार-तिमिर का करता नाश ।
बोधि-प्रदाता चित्त पद्म को, सकल अर्थ का करे प्रकाश ॥४॥
दर्शन श्री जिनेन्द्रचन्द्र का, सद्धर्मामृत बरसाता ।
जन्मदाह को करे शांत औ, सुख वारिधि को विकसाता ॥५॥
सकल तत्त्व के प्रतिपादक, सम्यक्त्व आदि गुण के सागर ।
शांत दिगम्बररूप नमूँ, देवाधिदेव तुमको जिनवर ॥६॥
चिदानन्दमय एकरूप, वंदन जिनेन्द्र परमात्मा को ।
हो प्रकाश परमात्म नित्य, मम नमस्कार सिद्धात्मा को ॥७॥
अन्य शरण कोई न जगत में, तुम्हीं शरण मुझको स्वामी ।
करुण भाव से रक्षा करिये, हे जिनेश अन्तर्यामी ॥८॥
रक्षक नहीं शरण कोई नहिं, तीन जगत में दुखत्राता ।
वीतराग प्रभु-सा न देव है, हुआ न होगा सुखदाता ॥९॥
दिन-दिन पाऊँ जिनवरभक्ति, जिनवरभक्ति, जिनवरभक्ति ।
सदा मिले वह सदा मिले, जब तक न मिले मुझको मुक्ति ॥१०॥
नहीं चाहता जैनधर्म के बिना, चक्रवर्ती होना ।
नहीं अखरता जैनधर्म से सहित, दरिद्री भी होना ॥११॥
जन्म-जन्म के किये पाप ओ बन्धन कोटि-कोटि भव के ।
जन्म-मृत्यु औ, जरा रोग, सब कट जाते जिनदर्शन से ॥१२॥
आज युगल दृग हुए सफल, तुम चरण-कमल से हे प्रभुवर ।
हे त्रिलोक के तिलक! आज, लगता भवसागर चुल्लू भर ॥१३॥